Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **" 1917 ईसवी में रूस की क्रांति के कारण।"**

(for TDC Part 2 HISTORY HONOURS)

1917 ईसवी में रूस की क्रांति के कारण।

प्रथम विश्वयुद्ध के पहले रूस की स्थिति खराब हो चुकी थी। रूस में यह स्थिति उत्पन्न होने का प्रमुख कारण प्राचीन कृषि पद्धति पर निर्भरता, व्यापक निरक्षरता एवं पूंजी की कमी थी। इन विषम परिस्थितियों ने रूस के क्रांति को जन्म दिया।

क्रांति के कारण

भूमि सुधारों की विफलता:-भूमि वितरण में उच्च असमानता व्याप्त थी क्योंकि भूमि का 20 प्रतिशत भाग बड़ी जागीरों के रूप में अधिग्रहित था और इस पर रूसी उच्च वर्ग का स्वामित्व था।वर्ष 1861 में 'दासता' (Serfdom) को तो खत्म कर दिया गया, फिर भी किसानों की स्थिति में सुधार नहीं हुआ। उनके पास अभी भी भूमि के अत्यंत ही छोटे-छोटे पट्टे थे। इनके पास न तो कोई पूंजी थी और न ही कोई सरकारी सहायता।1917 तक अत्यधिक निर्धन एवं प्रत्येक उपज के साथ अकाल के दुष्चक्र में फंसने वाले असंतुष्ट कृषकों की संख्या में

अत्यधिक वृद्धि हो गयी थी। उन्हें विकास एवं स्वायत्तता की आकांक्षा थी।

श्रमिकों की चिंताजनक स्थिति:-रूस में आधे से अधिक पूंजी विदेशी देशों से आई थी, जिनका श्रमिकों की स्थिति से कोई लेना-देना नहीं था। रूसी पूंजीपति ने भी मज़दूरी का श्रम मूल्य घटा दिया, ताकि वे विदेशियों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकें। इन्हें निम्न मजदूरी, निम्नस्तरीय आवास और अनेक दुर्घटनाओं की समस्या का सामना करना पड़ता था। साथ ही श्रमिकों के पास कोई राजनीतिक अधिकार नहीं था।इसके परिणामस्वरुप श्रमिकों और पुलिस के मध्य अनेक झड़पें और नियमित संघर्ष हुए।

दमन की कठोर नीतियाँ:- ज़ार निकोलस द्वितीय अभी भी राजाओं के दैवीय शासन के सिद्धांत पर विश्वास करता था और उसने अपने विरोध में उठने वाली आवाजों को निर्दयता पूर्वक दबा दिया। यहाँ तक कि आन्दोलनकारियों पर गुप्तचरों के ज़रिये नज़र रखी जाती थी।

मध्यम वर्ग के विचारों में परिवर्तन:-जिस प्रकार फ्राँस की

क्रांति का श्रेय फ्राँस के दार्शनिक, शिक्षित वर्ग आदि को प्राप्त है, उसी प्रकार रूस में भी क्रांति के वेग को इसी वर्ग से संबंध रखने वाले लोगों ने तीव्र किया। वे लोग नई-नई पुस्तकों का अध्ययन करते थे। पश्चिमी यूरोप के विचारकों की लिखी हुई पुस्तकें रूसी भाषा में अनुवादित हुई थीं।शिक्षित वर्ग पर उन नए विचारों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा, विशेषतः नवयुवक वर्ग नए विचारों का अध्ययन कर यह भली-भांति समझने लगे थे कि उनका देश उन्नति की दौड़ में बहुत पिछड़ा हुआ है, जिसका प्रमुख कारण जार की निरंकुशता है।

प्रथम विश्व युद्धः- प्रथम विश्व युद्ध ने रूस को भारी नुकसान पहुँचाया। रणनीतिक गलतियों के कारण 6 लाख से अधिक रूसी सैनिकों की मौत हो गई और रूस में धन का अभाव पैदा हो गया। लोगों को खाने के लिये रोटी का भी मिलना मुश्किल हो गया।

जार का अंतः- मार्च 1917 आते-आते जनता की दशा अत्यंत ही दयनीय हो गई थी। उसके पास न पहनने को कपड़ा था और न खाने को अनाज था। परेशान होकर

भूखे और ठण्ड से ठिठुरते हुए गरीब और मज़बूरों ने 7 मार्च को पेट्रोग्रेड की सड़कों पर घूमना आरंभ किया। रोटी की दुकानों पर ताज़ी और गरम रोटियों के ढेर लगे पड़े थे। भूखी जनता अपने आपको नियंत्रण में नहीं रख सकी। उन्होंने बाज़ार में लूट-मार करनी आरंभ कर दी।

सरकार ने सेना को उन पर गोली चलाने का आदेश दिया कि वह गोली चलाकर लूटमार करने वालों को तितर-बितर कर दे, किन्तु सैनिकों ने गोली चलाने से साफ मना कर दिया क्योंकि उनकी जनता से सहानुभूति थी। उनमें भी क्रांति की भावना प्रवेश कर चुकी थी। जार को अपना अंत नज़दीक नज़र आने लगा। ड्यूमा ने सलाह दी कि जनतांत्रिक राजतंत्र की स्थापना की जाए, लेकिन जार इसके लिये तैयार नहीं हुआ और इस तरह से रूस से राजतंत्र का खात्मा हो गया।

लेनिन का उदय:- जार के जाने के बाद अलेक्जेंडर केरेनस्की के अधीन एक अस्थायी सरकार सत्ता में आई। लेकिन सरकार बुरी तरह विफल रही क्योंकि इसने युद्ध जारी रखने का निर्णय लिया जो कि अत्यधिक अलोकप्रिय निर्णय साबित हुआ। 7नवंबर, 1917 को

बोल्शेविक पार्टी के नेता लेनिन के नेतृत्व में वामपंथी क्रांतिकारियों ने ड्यूमा की सरकार के खिलाफ रक्तहीन क्रांति के ज़रिये सत्ता पर दबदबा कायम कर लिया। लेनिन ने एक ऐसी सरकार का गठन किया, जिसमें किसानों और कामगारों को प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। इस प्रकार लेनिन के नेतृत्व में रुस के औधोगिक मज़दूरों की एक राजनीतिक पार्टी बोल्शेविक ने 1917 में रूस में क्रांति को सफल बनाया।

References: Internet & Competitive books.